जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं नर-नारी

महिला सशक्तिकरण सेमिनार का उद्घाटन करते हुए हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्ष आशा हुड्डा, ब्र.कु.चक्रधारी, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.भारतभूषण तथा अन्य मेहमान।

पानीपत। भारत ऐसा देश है जहां नारी को शक्ति का स्वरूप कहा गया है। जहां देवता से पहले देवी को पूजा जाता है, उसी भारत में आज नारी, अपने ही घर में सुरक्षित नहीं रही। आज नारी को अपनी सुरक्षा के लिए सेमिनार करने पड़ रहे हैं, तो कहीं जूडो कैम्प में जाना पड़ रहा है।

उक्त उद्गार हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्ष आशा हुड्डा ने ब्रह्माकुमारी संस्था के नवनिर्मित परिसर ज्ञान मानसरोवर में 'बदलते परिवेश में नारी की भूमिका' विषय पर आयोजित महिला सशक्तिकरण सेमिनार में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज की नारी को गांव का सरपंच तो बना दिया जाता है परन्तु उनके पास कोई निर्णय लेने का अधिकार नहीं होता है। नाम उनका चलता है परन्तु कार्य उनके पति करते हैं। यहां तक कि आज नारी को किसी पारिवारिक निर्णय में भी भागीदार नहीं बनाया जाता। जब नर और नारी को गृहस्थी रूपी रथ के दो समान पहिए कहा जाता है तो पुरुष ही सब निर्णय ले, यह कदापि उचित नहीं है। आज जब नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं है तो फिर हम यह भेदभाव क्यों करें।

ब्रह्माकुमारी संस्था के महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.चक्रधारी ने कहा कि विदेशों में आज भी भारत की संस्कृति का सम्मान किया जाता है। लेकिन अफसोस की बात है कि भारत में आज बहनें सुरक्षित नहीं रहीं। रात में बहनें अकेले कहीं आ जा नहीं सकती, घर पर अकेले सुरक्षित रह नहीं सकती। क्या अब पुलिस, कोर्ट, कचहरी या सख्त कानून के द्वारा ही नारी शोषण से बच सकती है..? जब तक मनुष्य का दृष्टिकोण नारी के प्रति नहीं बदलेगा तब तक कुछ भी सुधार नहीं हो सकता क्योंकि दृष्टि से ही सृष्टि बनती है। दृष्टि बदलने के लिए हमें सबसे पहले खुद को पहचानना होगा कि हम कौन हैं और हम कहां से आये हैं। जब हम स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा की संतान निश्चय करेंगे तो स्वत: ही विश्व बन्धुत्व की भावना फैलेगी और हमारी भावना नेक बनेगी। नारी के भी कुछ कर्तव्य हैं कि वह फैशन के नाम पर अपने चरित्र को दिशाहीन न करें। माताएं अपने बच्चों को बचपन से ही नैतिक शिक्षा अवश्य दें। घर को मंदिर व आश्रम बनाना होगा। लड़के व लड़कियों में भेदभाव न कर दोनों को समान रूप से परवरिश देना होगा।

ब्र.कु.भारत भूषण ने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही नारी को सम्मान दिया जाता रहा है। जब देवी देवताओं के नाम लिए जाते हैं तो पहले सीता, फिर राम या पहले लक्ष्मी बाद में नारायण का नाम आता है। नारी, अबला नारी नहीं बल्कि शक्ति का दूसरा रूप है।

पानीपत सबजोन की संचालिका ब्र.कु.सरला ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए सर्वशक्तिवान परमात्मा को याद करके नारी को शक्ति रूप बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नारी यदि आध्यात्मिकता के माध्यम से अपनी आत्मिक स्थिति को ऊंचा उठाए तो सर्व के सम्मान की पात्र स्वत: बन जाएगी। कार्यक्रम में उपस्थित ज्योति जागलान, निर्मल दत्त व पूनम राजरानी सहित सभी ने अपने वक्तव्य रखे। पूजा, महक, हरमन आदि बच्चों द्वारा बहुत ही सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

मीडिया में हो जीवन मूल्यों की प्रतिस्थापना

प्रो.कमल दीक्षित, ब्र.कु.मंजुला, ब्र.कु.रंजन तथा अन्य दीप प्रज्वलित करते हुए।

बारडोली। जीवनमूल्यों को स्वयं धारण कर संवेदना के साथ ही मीडियाकर्मी मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता कर सकते हैं। स्वयं के जीवन में मूल्य नहीं तो समाजनिष्ठ पत्रकारिता संभव नहीं है और संवेदनशून्य व्यक्ति से जीवनमूल्यों का प्रकाशन, प्रसारण सम्भव नहीं है।

उक्त विचार वरिष्ठ पत्रकार प्रो.कमल दीक्षित ने ब्रह्माकुमारीज़ तथा सोसायटी ऑफ मीडिया इनिशिएटीव फॉर वैल्यूज के संयुक्त तत्वावधान में 'जीवनमूल्यों को प्रस्थापित करने हेतु मीडिया की भूमिका' विषय पर आयोजित मीडिया सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि यह तो सच है कि आज भी मीडिया के लोग मीडिया कर्मियों में मूल्यों की कमी पर खुद ही आत्मालोचन करते हैं, यह तहलका प्रकरण से स्पष्ट हो गया है। पर वे समाज में जीवन मूल्यों में सकारात्मकता तथा मानवीय संवेदना के संबंध में उपभोग तथा बाजार के प्रभाव में आ जाते हैं। इस बारे में परिवर्तन की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जीवन मूल्य अध्यात्मनिष्ठ हुए बिना सम्भव नहीं है। अध्यात्म अपने को पहचानने का ही उपाय है और वह पहचान ही परमात्मा के साथ अपने को जोड़ सकती है।

बारडोली सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.मंजुला ने स्वागत सम्बोधन किया। वलसाड से पधारी ब्र.कु.रंजन ने आगामी कार्यक्रम गीताज्ञान रहस्य के बारे में सभी को जानकारी दी। ब्र.कु.अरूणा ने सभी को राजयोग द्वारा शांति की अनुभूति कराई। ब्र.कु.पिंकी ने सभी का आभार व्यक्त किया। ब्र.कु.डॉ.लतेश के शोध को राष्ट्रीय अवार्ड मिलने पर उनका सम्मान प्रो.कमल दीक्षित द्वारा किया गया।

निरहंकारी जीवन देता है प्रेरणा

राँची। पुलिस अधीक्षक भीमसेन टूटी ने राँची में ब्रह्माकुमारी संस्था का प्रथम सेवाकेन्द्र स्थापित कर ईश्वरीय सेवाओं का आरंभ करने वाली ब्र.कु.रानी के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि रानी बहन का निरहंकारी जीवन पग-पग पर हमें बाह्य प्रदर्शन से मुक्त, मिथ्या आकर्षण से परे होने की प्रबल प्रेरणा दे रहा है। ब्र.कु.निर्मला ने कहा कि जब पिताश्री ब्रह्मा को 1965 में राँची में भी एक स्थायी सेवाकेन्द्र की स्थापना करने की प्रेरणा हुई तब उन्हीं के निर्देशन में रानी बहन को पटना से राँची भेजा गया था। तब से लेकर 1982 के नवम्बर मास के अन्तिम दिनों तक उन्होंने राँची वासियों का आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा मार्ग-दर्शन किया। उनके अमृतमय वाणी ने अनेकों को प्रभु मिलन का वरदान देकर जीवनदान दिया। उनका हर कदम एक संदेश, प्रेरणा तथा आदर्श प्रस्तुत करता था।

पुलिस अधीक्षक भीमसेन टूटी, ब्र.कु.निर्मला दीप प्रज्वलित करते हुए।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 170 रुपये, तीन वर्ष 510 रुपये, आजीवन 4000 रुपये । विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721,POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/ Posting at Shantivan-307510 (Aburoad)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th Each Month
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।